शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

आधी आबादी का सच : 'और....और....औरत' आत्मकथा के सन्दर्भ में

प्राप्तिः 29.05.2022
स्वीकृतः 09.06.2022

49

पूनम चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, (हिन्दी)
फैकल्टी ऑफ ऐजुकेशन
तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
ईमेलः *poonam.chauhan402@gmail.com*

सारांश

सदियों से समाज का सबसे वंचित तबका 'स्त्रियाँ' शोषण और अपमान का दंश झेलती चली आ रही हैं। विडम्बना ये है कि एक महिला अपने ऊपर हो रहे किसी भी शोषण को चाहें वह आर्थिक हो, चाहे राजनीतिक या फिर चाहे वह पारिवारिक हो, उसके खिलाफ आवाज उठाने का साहस नहीं कर पाती लेकिन आज की नारी शिक्षित होने के कारण अब धीरे–धीरे अपनी दबी हुयी मूक आवाज को मुखर करने का प्रयत्न कर रही है। शिक्षा ही एकमात्र वह साधन है जिसके आधार पर स्त्री समाज में आत्मनिर्भर तथा स्वावलम्बी जीवन जी सकती है। ईमानदारी के साथ लिखी गयी कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा और...और. ..औरत समाज के सामने कुछ प्रश्न खड़े करने में सहायक सिद्ध हुयी हैं। समाज की संकुचित मानसिकता ने उनको अपने स्वार्थ के लिए कितनी पीडा तथा दर्द दिया है, यह हम लेखिका, कृष्णा अग्निहोत्री के भोगे हुए जीवन की आत्मकथात्मक कृति 'और...और... औरत' का अध्ययन करके सहर्ष ही अनुमान लगा सकते हैं।

मुख्य बिन्दु

शोषण, औरत, अग्निहोत्री, स्त्री, लेखिका।

आज की नारी स्वतन्त्र होकर जीना चाहती है। 'और...और...औरत' कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा का दूसरा खण्ड है, जो सन् 2010 ई0 में नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। साठोत्तरी महिला साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखने वाली कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने जीवन की सच्चाई को बड़ी ईमानदारी के साथ इस आत्मकथा में वर्णित किया है। अपनी आत्मकथा का पहला खण्ड 'लगता नहीं है दिल मेरा' में वो कहती हैं "जीवन तो सभी जीते हैं, परन्तु कुछ कहने–सुनने से ही समय की कहानियाँ बनती हैं– बहुत झेला, बहुत भोगा, बहुत सहा...नहीं सहन हुआ तो लिख डाला। लिखने का उद्देश्य किसी को दुःख पहुँचाना या लांछित करना नहीं है। जो जिसने दिया, उतना आज अभिव्यक्त हो ही गया।"[1]

कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी जीवनयात्रा का स्पष्ट चित्रण अपनी आत्मकथा के माध्यम से वर्णित किया है। उन्होंने अपनी आत्मकथा के माध्यम से पुरूष प्रधान समाज में नारी मन के अनेक पहलुओं को उजागर किया है तथा उन लोगों पर कटाक्ष किया है जो एक स्त्री का आदर और प्रेम करने का दिखावा तो करते हैं लेकिन वास्तविकता कुछ और ही होती है।

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा में उनका विद्रोही रूप देखने को मिलता है। बचपन में माँ का डरा–धमकाकर रखना तथा सदैव माँ का पक्षपाती व्यवहार लेखिका के विद्रोही स्वरूप के लिए उत्तरदायी है। न माँ का प्यार मिला, न विवाह के बाद पति का। कृष्णा जी बचपन से अन्त समय तक प्यार से ही वंचित रहीं। उनकी ये आत्मकथा में स्पष्ट देखा जा सकता है कि एक नारी के पारिवारिक जीवन पर पुरूष सत्ता कितनी भारी पड़ती है। हर स्थान पर पुरूष का वर्चस्व ही दिखायी देता है। क्या सदैव अवहेलना और अपमान ही एक स्त्री की नियति है ? क्या पुरूष का कार्य स्त्री का बस शोषण करना है?

स्त्री का शोषण युगों–युगों से पुरूषों के रूप में हर सम्बन्ध ने किया है। उनके सहोदर ने भी उनका मानसिक शोषण किया और ऐसी अवस्था में 'जिसे उम्र की तूफानी अवस्था कहते हैं' घर से निर्वासित कर दिया। यहाँ यह बात भी चरितार्थ होती है कि आज भी पैतृक घरों पर भाइयों का ही आधिपत्य होता है और इस अवस्था में कृष्णा जी के समक्ष निराश्रित होकर भटकने के सिवाय कुछ नहीं था। संभवतः यही कारण रहे होंगे कि कृष्ण जी के आगामी जीवन में जो भी अशोभनीय, अप्रिय व अमानवीय घटनायें घटित हुयी होंगी, उनका आधार कृष्णा जी का उस समय निराश्रित हो जाना ही रहा होगा। कृष्णा जी लिखती हैं ''मुझे स्वयं आश्चर्य है कि मैं मरी क्यों नहीं?'' भाई ने सुंदर, कम आयु वाली बहन को घर से निकाला और निर्वासित बहन को लोगों ने भला–बुरा कहा। कोई भी व्यक्ति इस अन्याय के विरोध में नहीं खड़ा हुआ।''[2] लेखिका ने अपनी इस आत्मकथा में अपने जीवन के रहस्यों को उदघाटित करने में जरा भी संकोच नहीं किया है। कृष्णा अग्निहोत्री की इस आत्मकथा में हम देखते हैं कि स्वयं लेखिका के अन्दर कई औरतों के रूप विद्यमान हैं। परम्पराओं और संस्कारों में जकड़ी हुयी लेखिका आत्मकथा भूमिका में बड़ी निर्भीकता के साथ लिखती है ''बहुत निर्भीक। अत्याचार के छोटे से तंत्र को तोड़ने में अग्रणी उत्पीड़ित स्त्री को देख जलने लगती है। हाथ में बन्दूक हो तो दो गोली चला भी सकती है। जीवन में आनन्द आता है, वह उसे भोग नहीं पाती। यदि स्त्रियाँ कारणवश शील तोड़ती तो मुझे बुरा नहीं लगता। उसके समर्थन में मैं तनी रहूँगी। कोई भी पुरूष मुझसे सौदा करके, मुझे नहीं पा सका। इसका मुझे नाज तो है लेकिन उच्छृंखलता या व्याभिचार मेरी दृष्टि में गलत होते हैं, प्यार अलग अनुभूति है।''[3]

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा को पढ़कर ये बात तो निश्चित ही कही जा सकती है कि सभ्य और शिक्षित विस्तारपूर्ण विचारधारा वाली स्त्री उतने भर से सन्तुष्ट नहीं होती जितना पुरूष द्वारा स्त्री को देने की परम्परा विद्यमान है। यही कारण है कि प्रथम विवाह के रूप में मिले सत्यदेव अग्निहोत्री से, जो अपेक्षाएं लेखिका रखती थी वे पूर्ण न हो सकी। एक आदर्श पति के रूप में जो उनके कल्पना लोक में विचरण करते थे वे साक्षात न मिल सके। स्त्री की प्रसन्नता और संतुष्टि के लिए मात्र भौतिक सुख ही पर्याप्त नहीं होते वह एक आदर्श पुरूष, दुर्व्यसनों से मुक्त पति ही नहीं बल्कि शब्दों के स्नेह से ही सरावोर करने वाला जीवन साथी चाहती है। एक स्त्री की विशेषता ये भी हैं कि वह भी अपने स्त्रीत्व की मर्यादा, पारिवारिक प्रतिष्ठा और समाज की परम्पराओं को एक सीमा तक ही अपने कंधों पर सम्हाल पाती है। जब पति के दुर्व्यजन, जीवनोपयोगी प्रेम का अभाव और जीवन साथी का पुरूषत्व की सीमाओं से पार निकल जाना स्त्री को खलने लगता है तो वह समस्त बेड़ियों को खण्डित कर मुक्त जीवन जीना चाहती है, ऐसे ही लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री ने किया।

इस पुरूष प्रधान समाज का प्रभाव लेखिका के जीवन पर भी पड़ा। वो स्वच्छंद विचारधारिणी होने के उपरान्त भी अपने आपको जैसे अप्रत्यक्ष बेड़ियों में बंधा–बंधा सा महसूस करती थी। परिवार में किसी भी सुखद घटना के घटित होने का श्रेय पुरूष स्वयं लेना चाहता है किन्तु जीवन में किसी भी अप्रिय घटना के घटित होने पर वह इसका दोष पत्नी पर मड़ देता है। लेखिका लिखती है ''हमारे संबंधों की टूटन के वे ही स्वयं जिम्मेदार हैं मैं भी जानती हूँ कि यदि उनके पीटने से मैं भयभीत होकर कानपुर न छोड़ती तो आम स्त्री की भाँति कई समझौते के बीच जीती ही रहती। कुढ़ती ही रहती, पर प्रारब्ध तो दूसरी ही आँख मिचोली खेल रहा था। न कहीं इसका दोष भी अपनी पत्नी को देते हैं।''[4]

यही कारण है कि उनके पहले पति अपनी नौकरी छूट जाने का दोष कृष्णा जी को देते हैं जबकि वास्तविकता तो ये है कि अपने दुर्व्यसनों के कारण ही सत्यदेव अग्निहोत्री को नौकरी से हाथ धोना पड़ा था।

सत्यदेव अग्निहोत्री से विवाह करके कृष्णा को कभी सुख नहीं मिला। पति के साथ लेखिका के अनुभव बड़े ही कटु और दुखद रहे हैं। पति का मानसिक सन्तुलन खराब होने पर लेखिका अपने पिता के घर मायके आ जाती है। पति से सम्बन्ध विच्छेद होने के बाद एक स्त्री के पास एकमात्र ठिकाना मायका ही होता है लेकिन ये भी समाज की विसंगति ही है जो बेटी विवाहोपरांत अपने मायके में रहने के लिए आती है तो परिवार वाले उसी बेटी को बड़ी हेय दृष्टि से देखते हैं तथा उनके लिए वही बेटी बोझ बन जाती है।

लेखिका को जो पीड़ा ससुराल में मिली थी वो माता–पिता के घर आकर भी कम नहीं हुयी। जिस रूप को दर्पण में देखकर लेखिका फूली नहीं समाती थी। आज उसी रूप को समाज की कुदृष्टि वाले लोग अपनी आँखों की तृप्ति का साधन समझने लगे। उनकी सुन्दरता ही उनके लिए अभिशाप सिद्ध होने लगी। लेखिका अनुभव करती है कि क्या पति को छोड़कर आयी हुयी स्त्री का सुन्दर होना उसके लिए इतना कष्टदायी है?

परिवार वालों की उपेक्षा और समाज की कुदृष्टि से बचने को पुरूष रूपी छत्र–छाया की आवश्यकता होने लगती है अतः वे सत्यदेव अग्निहोत्री को तलाक देकर श्रीकांत जोग से विवाह कर लेती है। श्रीकान्त जोग से विवाह करते समय लेखिका ये भी भूल जाती है कि श्रीकांत जोग जो कि मजिस्ट्रेट तो हैं लेकिन साथ ही चार बच्चों के पिता भी हैं किन्तु ये उनके भाग्य की बिडम्बना ही थी कि लेखिका को इस रिश्ते में भी छल ही मिला।

पुरूष प्रधान समाज की कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिसमें पुरूष स्त्रियों से पाना तो बहुत कुछ चाहता है, परन्तु जहाँ स्त्री के प्रति कुछ समर्पण की बात आती है तो उसके कदमों में शिथिलता आने लगती है। अन्ततः पुरूष अपनी पनाह में आयी हुयी स्त्री से देह प्राप्ति की लालसा पूर्ण होने पर उससे दूरी बनाने लगता है। ऐसा ही श्रीकांत जोग के चरित्र में भी झलकता है। लेखिका को स्त्री श्रीकांत जोग का ये व्यावहारिक परिवर्तन पहले तो ठीक नहीं लगता और अन्ततः असहनीय हो जाता है तो लेखिका अपने जीवन में एक और कठोर कदम उठाने पर विवश होती है और श्रीकांत जोग के अनैतिक व्यवहार के कारण उससे भी सम्बन्ध विच्छेद कर लेती है।

विवाह एक ऐसा संस्कार होता है जिसमें पति एवं पत्नी के बीच में मित्रवत व्यवहार भी होना चाहिए एवं दोनो एक दूसरे के दोषों को परस्पर स्वीकार करते हुए जीवन रूपी रथ पर आरूढ़ होकर उस संस्कार को पूर्ण कर सके किन्तु वैचारिक मतभेद के कारण उस रथ के पहिए डगमगाने लगते हैं अतः दोनों विवाह का अनुभव कृष्णा जी के लिए बहुत ही कटु और दुखद रहे।

कृष्णा अग्निहोत्री एक बार फिर जिन्दगी के उसी मोड़ पर आकर खड़ी हो जाती है जहाँ उसे सारा जगत पराया लगने लगता है। इस बार स्नेहिल शब्दों की बूंदे लेखिका के दामन में एक पत्रकार ने डाली। जैसे हवा के तेज झोंको से एक बेल किसी आलम्बन से उतरकर धरा पर बिछ जाती है, ऐसे में वह किसी भी सहारे से लिपटकर फिर से उठना चाहती है। लेखिका को एक बार फिर प्रताप नामक पत्रकार से प्रेम हो जाता है और इस प्रेम में भी लेखिका पुनः धोखा खाती है। एक स्थान पर लेखिका लिखती हैं ''आज भी ऊँची उड़ान के बावजूद स्त्री अस्मिता को समाज ने अपनी मुट्ठी में कैद कर रखा है। अपने को बहुत सुलझे, समझदार एवं आधुनिक कहने वाले पुरूषों ने भी बिना चढ़ावे के किसी स्त्री की सहायता शायद ही की हो।''[5]

लेखिका को अपने जीवन में जो भी पुरूष मिले। उन्होंने सब पर भरोसा किया। उन्हें प्रेम के बदले में सिवाय कष्ट एवं पीड़ा के कुछ नहीं मिला। लेखिका अपनी आत्मकथा में लिखती है ''मैंने मर्यादाओं वे नैतिकता के मान मूल्य जीवन में अपनाए हैं। परन्तु इस नंगे सत्य से इनकार नहीं कर सकती कि भीतर बैठी औरत को सदा एक ऐसे पुरूष की प्रतीक्षा रही, जो उसे प्रेमी सा सहलाए और उसे आलिंगनबद्ध कर इतना व्याकुल कर दे कि मेरी औरत समर्पण के लिए बाध्य हो जाए। मेरी यह एक तरफा चाहत रही, यह सत्य भी है।''[6]

बचपन से प्यार के लिए तरसती लेखिका हर किसी पर भरोसा करती है और बार–बार धोखा खाती हैं। कृष्णा अग्निहोत्री ने स्वयं स्वीकार किया है कि प्रसिद्धि प्राप्ति की लालसा में उन्होंने कई बार उस स्थान पर भी समझौता किया जहाँ उनको अपने सम्मान को दांव पर लगाना पड़ा। गोवा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रोहिताश्व चतुर्वेदी के साथ मित्रता का सम्बन्ध ये जानते हुए भी रखती हैं कि वो व्यक्ति उनके सामने एक अश्लील नियंत्रण रख चुका है। वो लिखती हैं ''हम पसन्द करते हैं उसी के साथ समय व्यतीत करना चाहते हैं परन्तु मैं इस बात से असहमत हूँ कि यदि सामने वाला असहमत हो तो हम उससे सामान्य मित्रता भी न रखें।''[7]

लेखिका ने इस आत्मकथा में 'खण्डवा' वाले उस प्रसंग पर भी प्रकाश डाला है जिसमें कृष्ण राघव ने लेखिका को बदनामी की ओर धकेल दिया। उन्होंने जिस पर भी भरोसा किया, लोगों ने सदैव विश्वासघात किया। कृष्णा जी ने अपने जीवन में मिले छल–प्रपंच को बिना छिपाए आत्मकथा में प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस आत्मकथा में मध्य प्रदेश की साहित्यिक राजनीति पर भी प्रकाश डाला है। साहित्यिक क्षेत्र में भी उनके साथ पक्षपात किया गया। उनकी लिखी रचनाओं को कुछ साहित्यकारों ने अपना नाम देने का प्रयास किया। लेखिका ने जीवनभर संघर्ष किया। उनके जीवन में सुखद अनुभूतियों के क्षण बहुत कम आए। साहित्य जगत में उनकी कहानियों की जानबूझकर उपेक्षा की जाती।

निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि कृष्णा अग्निहोत्री के जीवन की पूरी दास्तान ही छल प्रपंच और झूठे आरोपों से भरी रही। अपनी आत्मकथा के विषय में कृष्ण जी स्वयं लिखती हैं ''आत्मकथा में केवल रहस्य या अश्लील, प्रेमकथाएं लिखना नहीं चाहा, वहां मेरी रोज की लड़ाई है, जीवन में रोमांस ही तो सब कुछ नहीं। अर्थ, संयम, दैनंदिन की अनिवार्य आवश्यकताओं का भी संघर्ष है।''[8]

और..और..औरत आत्मकथा का अध्ययन करते समय कई बार मेरी पलकें भीगीं हैं। कृष्णा जी के बचपन से लेकर अंत समय तक का सफर संघर्ष से ही घिरा रहा। इस समाज की नियति बड़ी

विचित्र है, जिसमें स्त्री को ही सदैव मोहरा बनाया जाता है। कृष्णा अग्निहोत्री का दर्द इन पंक्तियों में उभरकर सामने आता है ''हम तो तड़पे पर सलीके से, कभी आंखें व दामन भीगा न किया। जिंदगी के प्रवाह में भावनाएं कट–कटकर गिरती रहीं, हम सहारे व प्यार का हाथ ऊंचा किए बहते ही रहे। जीवन भर जलते हुए, बस कुछ किताबें ही तो छोड़कर चले जाएंगे। जाते–जाते भी खुलकर हंसते–हंसते भी दर्द बिखरेगा और बिखरता रहेगा। जिंदगी के आखिरी मोड़ पर पहुंच मेरी इच्छा यही है कि जलते दीए सी जलती शनैः–शनैः से शांत हो जाऊं।''[9]

इस पुरूष प्रधान समाज में एक स्त्री को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं, इन सब प्रसंगों की चर्चा लेखिका ने इस आत्मकथा में की है। परिस्थिति से जो संघर्ष करता है उसकी जीत तो सुनिश्चित है और यही कृष्णा जी के साथ भी हुआ। आर्थिक सबलता के लिए उन्होंने अथक श्रम किया परन्तु कभी बिकी नहीं। ये भी सार्वभौमिक सत्य है कि आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने के लिए उन्हें अनेक संघर्षों के दुर्गम रास्तों से अपना सफर तय करना पड़ा और समय–समय पर समाज के द्वारा दिए गए तानों, उलाहनों को भी सहना पड़ा। निष्कर्षतः कृष्णा अग्निहोत्री की ये आत्मकथा उनके यातनापूर्ण कष्टमय जीवन की गाथा है। लेखिका ने न केवल अपने जीवन का बल्कि समाज के ठेकेदारों का कच्चा–चिट्ठा भी खोला है। जीवन के विविध आयामों के मिश्रण के कारण ही ये आत्मकथा सदैव जीवंत रहेंगी।

संदर्भ

1. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2010). लगता नहीं है दिल मेरा. सामयिक प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ 7.
2. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज. एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ 32.
3. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत भूमिका, सामयिक बुक्स जटवाड़ा, दरियागंज, एन.एस.मार्ग, नई दिल्ली।
4. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ 73.
5. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ 21.
6. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ 140.
7. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ 102.
8. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली. पृष्ठ 9.
9. अग्निहोत्री, कृष्णा. (2021). और...और...औरत. सामयिक बुक्स जटवाड़ाः दरियागंज, एन.एस. मार्ग, नई दिल्ली 110002. पृष्ठ 26.